April 2016

28

T19-247

Thursday

(2) 2/7/20

तुलसी - काव्य —

B.A. Part I

Hindi Hons

और कौन हो सकता है। राम के इस रूप का युगीनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा तथा व्यापक समर्थन भी मिला।

तुलसी ने अपने युग की परिस्थितियों का गहरा अध्ययन किया था। उसकी विषमताओं और असंगतियों को ठीक से पहचाना था। तथा इसी के आधार पर इन्होंने काव्य की रचना की है। कहा जाता है कि बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास हुए। लोकनायक वही हो सकता है जिसमें समन्वय की भावना हो। तुलसीदास ने राजा-प्रजा, ब्राह्मण-शूद्र, सगुण-निर्गुण, लोकमत-वेदमत इत्यादि का समन्वय कर समन्वयता रूपी बेहतर भारत का संदेश दिया। इन्होंने शंकर-राम, विनय और वीरता आदि का समन्वय कर समाज में आदर्श संदेश दिया।

तुलसीदास भक्ति-पारावार में डूबती जनसाधारण की नौका के कर्णधार कहे जा सकते हैं। इन्होंने सगुण भक्ति के आलोक में राम की भक्ति आराधना को अपनाया तथा इन्हीं की भक्ति के आधार पर संसार से पार उतरने की बात कही। इनमें श्रद्धा एवं समर्पण की बात कही गई है।

दर्शन के क्षेत्र में वे रामानुजाचार्यों के विशिष्टाद्वैत दर्शन से प्रभावित हैं —

(1)

B.A. Hindi Hons Part I
मध्यकालीन हिन्दी काव्य

डॉ० अरविन्द कुमार
2/7/20 एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज,
जहानाबाद

तुलसीदास क्रमशः —

तुलसीदास के सिद्धान्त का यह रूप सर्वाधिक सशक्त रूप में है।

रामकथा इस देश में तुलसीदास से पहले भी कई बार कही-सुनी जा चुकी थी। पर तुलसी ने इसे जिस रूप में उपस्थित किया, उनसे पहले का कोई कवि उसे यह रूप नहीं दे पाया था। समाज और युग के अनुरूप इसमें नवीनता का समावेश करके तुलसी ने रामकथा को नये रूप में राष्ट्र के सामने प्रस्तुत किया। रामराज्य की स्थापना तुलसी की मौलिक देन है। इन्होंने रामराज्य के आलोक में सुंदर मानव जिज्ञासा की बात कही —

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज काहुहि नहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

राम के आदर्शवादी रूप को तुलसी इसीलिए अपने सामने रखा। जिस युग में राजसिंहासन के लिए भाई का हाथ भाई के खून से रंगा रहा हो उस युग के लिए भारत की आध्यात्मिकता को बढ़ाकर आदर्श

क्रमशः —

③ B.A. Hons Part I
तुलसी
2/7/20 कक्षा: —

May 2016
144-222
Monday
23

भाषा पर तुलसी का पूरा अधिकार था। इन्होंने अवधी और ब्रजभाषा इन दोनों प्रमुख बोलियों में काव्य रचना की। इनकी भाषा पात्रानुकूल, प्रवाहमयी तथा सरल है। इन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य शैलियों में काव्य रचना की।

तुलसीदास ने अपने काव्य में सभी रसों एवं अलंकारों का प्रयोग किया है। पर प्रधानता शांत और भक्ति रस की तथा रूपक, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा इत्यादि अलंकारों की सुन्दर रूप में रही है।

कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि तुलसीदास नाम किसी कवि विशेष का न होकर एक विराट सांस्कृतिक आंदोलन का है, सारे उत्तरी भारत के जीवन के मूल्यों को बदल देना जिसका लक्ष्य रहा है और जिसने अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक धागे में पिरोकर आदर्शों का चिरस्थायी दीप जला दिया है।